चोर पुराण

विमल कुमार

Chor Puraan
by Vimal Kumar

प्रकाशकः *पेंगुइन बुक्स, यात्रा बुक्स के सहयोग से*
प्रकाशितः *फ़रवरी 2007*
मुद्रणः *पेंगुइन*
मूल्यः *रु 150.00*
आई एस बी एनः *0143101641*
ऐडिशनः *पेपर बैक*
फ़ॉरमेटः *बी*
पृष्ठः *216* pp
वर्गीकरणः *मौलिक*
क्षेत्र अधिकारः *विश्व*

- **Published by** Penguin Books India in association with Yatra Books
- **Published:** February 2007
- **Imprint:** Penguin
- **Special Price:** Rs. 175.00
- **Cover Price:** Rs.175.00
- **ISBN:** 0143101641
- **Edition:** Paperback
- **Format:** B
- **Extent:** 216pp
- **Classification:** Non-Fiction
- **Rights:** World

चोर! चोर! सुनते ही कान खड़े हो जाते हैं। दिमाग़ आप से आप एलर्ट मोड में आ जाता है। ऊपर से यह चोर पुराण! चौंकिए मत, जनाब। चौर-विद्या पर हमारे संस्कृत ग्रंथों में बहुत कुछ लिखा गया है। पहले समय के चोर भी उसूलों वाले हुआ करते थे, मगर आज हालात काफ़ी बदले हैं। इन बदलते हालात से ख़ुद चोर भी हैरान-परेशान हैं। वे भी परेशान हैं कि कौन चोर है और कौन सिपाही? इसी माहौल के मद्देनज़र चोर पुराण की महती आवश्यकता महसूस होने लगी थी। हो सकता है, इन मौसेरे भाइयों की सीनाज़ोरी का कुछ राज़ (या दर्दे-जिगर) आप पर भी ज़ाहिर हो जाए।

इस संकलन में दो प्रकृति के चोर हैं। एक तो वे हैं, जिनके लिए चोरी जीवनयापन का ज़रिया है, दूसरे स्तर पर वे हैं जो ज़्यादा से ज़्यादा भौतिक साधन जुटा लेना चाहते हैं। दूसरे स्तर वाले चोर समाज में भरे पड़े हैं। लघुकथाओं में इस दूसरे स्तर की पूरी लॉबी सामने आती है। पत्रकार से लेकर सरकार तक, पुलिस से जज तक और रीटेलर से लेकर डीलर तक सभी की आत्मा में चोर बसे हैं। लेखक की चुटीली भाषा और गहरी दृष्टि जिस रोचक तरीक़े से समाज की विभिन्न परतों को खोलती है, उस से पाठक .ख़ुद को भी पूरे दृश्य में शामिल महसूस करता है। – नवभारत टाइम्स

लेखक परिचय

विमल कुमार का जन्म 9 दिसंबर 1960, पटना में हुआ। अब तक आपके दो काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। आपको भारत भूषण अग्रवाल स्मृति पुरस्कार, शरद बिल्लौर स्मृति पुरस्कार, बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान आदि पुरस्कारप्राप्त हुए हैं। विभिन्न भाषाओं में आपके अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख-रचनाएं आदि प्रकाशित होते रहते हैं। संप्रति आप यूएनआई (वार्ता) में कार्यरत हैं।